

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए, पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ ।।

श्रीमद्भगवद्गीता 4 / 8

## स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/362918 दिनांक 18.10.2021 के अनुसार **श्री मनु टी.आर.** ने 7.10.2021 से संस्थान के केंद्रीय पुस्तकालय में सातवें वेतन आयोग के लेवल-10 में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/363213 दिनांक 20.10.2021 के अनुसार **प्रो. कुमार मधुकर** ने 7.10.2021 से संस्थान के कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल-12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- प्रो. कुमार मधुकर को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित "युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप" भी प्रदान की गई है ।
- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2021/361518 दिनांक 12.10.2021 के अनुसार **प्रो. दीपक कुमार अग्रवाल** ने 30.09.2021 से संस्थान के जैव चिकित्सा इंजीनियरी केन्द्र में सातवें वेतन आयोग के लेवल-12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड-I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है ।
- प्रो. दीपक कुमार अग्रवाल को उनकी

नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो के लिए) संस्थान द्वारा प्रायोजित "युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप" भी प्रदान की गई है ।

## पुनर्नियुक्ति

- प्रो. ए. रमणन** (रसायन विज्ञान विभाग) की संस्थान संविधि के पैरा 13 (2) के अनुसार वर्तमान शैक्षिक सत्र के अंत तक अर्थात् 30.6.2022 तक के लिए रसायन विज्ञान विभाग में प्रोफेसर के रूप में पुनर्नियुक्ति की गयी है ।

## सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 अक्टूबर, 2021 को अपराहन में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :-

**प्रो. अरुणाचलम रमणन, प्रोफेसर, रसायन विज्ञान विभाग**



**प्रो. ए. रमणन** ने 19 सितम्बर, 1990 को संस्थान के रसायन विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था । 1 अगस्त, 1997 में आपको सह प्रोफेसर तथा 24 जनवरी, 2005 को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया ।

आपके शोध रुझानों में ठोस अवस्था रसायन, मॉटिरियल रसायन विज्ञान तथा

क्रिस्टल इंजीनियरी शामिल हैं । ठोस पदार्थों में आपकी रुचि तब शुरू हुई जब आप भा.प्रौ.सं. मद्रास में अपने एम.एससी. शोध प्रबन्ध के एक हिस्से के रूप में होल्मियम फेराइट के हेर्मानेन्ट मैग्नेटाइजेशन का अध्ययन कर रहे थे । भा.वि.सं. बंगलौर में आपका पीएच.डी. कार्य 'कन्वेंशनल एक्स-रे तथा इलेक्ट्रॉन विवर्तन तकनीकी का उपयोग करके टर्नरी बिस्मथ ऑक्साइड के संरचनात्मक रसायन विज्ञान' पर था । आपने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के सहयोग से स्माल क्रिस्टल की उच्च रिजॉल्यूशन TEM इमेज को आपने क्रिस्टल संरचनाओं का एक पूरी तरह से अलग परिप्रेक्ष्य 100nm आकार से कम सिखाया जहां क्रम, विकार, अन्तर्वृद्धि तथा दोष सह-अस्तित्व में हो, अणुओं के विपरीत ठोस पदार्थों का सबसे रोमांचक हिस्सा स्टोइकोमेट्री से विचलन है जिसको रसायन विज्ञानी अत्यन्त उत्साहित होकर पता लगाते हैं । माइक्रोस्तर पर जो क्रम सही प्रतीत होता है वह सबमाइक्रोन स्तर पर पूरी तरह से भिन्न हो सकता है । यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर, यू.के. (1986-89) में एक पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप ने इंस्टिट्यूट लैंगविन, लाउ, ग्रेनोबल तथा रदरफोर्ड एप्पलटोन लेबोरेट्री, ऑक्सफोर्ड में न्यूट्रॉन स्केटरिंग सुविधा के माध्यम से जटिल धातु ऑक्साइड में हाइड्रोजन तथा लिथियम जैसे हल्के परमाणु की संरचना और गतिशीलता की जांच करने में सक्षम बनाया ।

भा.प्रौ.सं. दिल्ली में अपने करियर की

शुरुआत से ही वे सेल्फ-असेम्बली विषय पर आकर्षित रहे हैं। भौतिकी एवं रसायनिक गुणों की अधिकता के फैलाव के लिए अणुओं से फ्रेमवर्क के प्रदर्शित करने वाली संरचनाओं की एक विस्तृत श्रृंखला को कैसे असेम्बल किया जाता है? आपकी प्रारम्भिक यात्रा अन्य पॉलिऑक्सोमेटालेट्स (POMs) के संरचनात्मक रसायन विज्ञान-सरल पॉलिन्यूक्लियर अणु, ऑक्साइड कलस्टर के तरह जो हल्की प्रतिक्रिया स्थिति के अन्तर्गत जटिल पैटर्न बना सकते हैं, के साथ शुरू हुई। आपके रिसर्च ग्रुप ने क्रिस्टलीय ठोस (कार्बनिक, अकार्बनिक अथवा धातु कार्बनिक) को व्यवस्थित तरीके से तथा क्रिस्टल गठन के मान्यता प्राप्त पैटर्न में संश्लेषित किया। क्रिस्टल संरचना डेटाबेस के साथ मिलकर विभाग में उपलब्ध पाउडर तथा सिंगल क्रिस्टल एक्स-रे डिफ्रेक्टोमीटर ने स्वयं सिद्ध सुपर-मालेक्यूलर पाथवे को सम्भव बना दिया। जो ठोस न्यूक्लियेशन में आणविक अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है।

भा.प्रौ.सं. दिल्ली में आपकी तीन दशकों की शैक्षणिक यात्रा में तीव्रबुद्धि तथा उत्साही यू.जी., पी.जी. तथा पीएच.डी. विद्यार्थियों को पढ़ाना एवं सलाह देना एक सुखद हिस्सा रहा है। क्रिस्टल इंजीनियरी पर पहली पाठ्यपुस्तक के आप सह-लेखक भी रहे हैं।

आप अन्तरविद्याशाखायी अनुसंधान स्कूल के संस्थापक अध्यक्ष (2017-2019) तथा रसायन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष (2012-2015) रहे। आपने गेट, उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष (2006-2009) के रूप में तथा केन्द्रीय अनुसंधान सुविधा (2011-2012) के संस्थापक समन्वयक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। राष्ट्रीय स्तर पर आप अर्ली करियर रिसर्च अवार्ड तथा नेशनल पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप (रसायन विज्ञान), SERB (2006-2008) के अध्यक्ष रहे। आप कई शैक्षणिक तथा वैज्ञानिक निकायों के सदस्य रहे:—DST-FIST (रसायन विज्ञान) (2016-2019)

DST-Purse (2018-2020), DST-Inspire (2016-2018), DST कार्यक्रम सलाहकार समिति-अकार्बनिक रसायन विज्ञान (2012-2015)। आप रॉयल सोसाइटी ऑफ कैमिस्ट्री के फेलो रहे हैं। आप तमिलनाडु के भीतरी हिस्सों में कावेरी तटों पर पले एवं बढ़े। अपने शोध करियर की शुरुआत में ही क्रिस्टल ने आपको आकर्षित किया। खनिज, प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले क्रिस्टल पृथ्वी के टाइम कैप्सूल हैं। क्रिस्टल हमारे जीवन में होने वाले कई परिवर्तनों के साक्षी रहे हैं। ये क्रिस्टल प्राचीन परिदृश्य तथा प्रारम्भिक जीवन में आधुनिक समय में बदलाव-हीरे से लेकर मोबाइल फोन तक के लिए आणविक अन्तर्दृष्टि प्रदान करते हैं। रसायन विज्ञानी के रूप में आप अभी भी आश्चर्य करते हैं कि कैसे अणु हमारे चारों ओर क्रिस्टलीकरण नामक प्रक्रिया में इस तरह की रंगीन दुनिया को बुनते हैं। यह अभी तक एक पहेली है कि सभी अणु समान रूप से या जल्दी से क्रिस्टलीकृत क्यों नहीं होते हैं।

अत्यंत मृदु एवं मितभाषी स्वभाव के प्रो. ए. रमणन अपने संकाय साथियों, स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय रहे हैं।

**श्री विजय कुमार भारज (25231), कार्यपालक अभियन्ता, निर्माण संगठन**



**श्री विजय कुमार भारज** ने 29 सितम्बर, 1984 को संस्थान में कनिष्ठ अभियन्ता (सिविल) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अक्टूबर, 1992 को आर.एन्ड सी.डी. एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अभियन्ता (ग्रेड-1) के रूप में चयनित किया गया। 2 जुलाई, 1997 को आपको ए.एस. डब्ल्यू. के रूप में नियुक्त किया गया। 13 अक्टूबर, 1999 को आपको सहायक कार्यपालक अभियन्ता के रूप में नियुक्त किया गया। 13 अक्टूबर, 2007 को आपको एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत तथा 5 नवम्बर, 2016 को आपको (आर.

आर) के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया। 14 सितम्बर, 2021 को आपको (एल.डी. ई.) के अन्तर्गत कार्यपालक अभियन्ता के रूप में नियुक्त किया गया। श्री विजय कुमार भारज एक मेहनती एवं कर्मठ कार्यपालक अभियन्ता रहे हैं। आपने संस्थान में अपने सेवाकाल के दौरान भा. प्रौ.सं. दिल्ली से निर्माण प्रौद्योगिकी एवं प्रबंध में एम.टेक. (2006, अंशकालिक) की उपाधि प्राप्त की।

**श्री दिलवेंद्र सिंह रावत (26103), वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, भौतिकी विभाग**



**श्री दिलवेंद्र सिंह रावत** ने 28 अगस्त, 1988 को संस्थान में तकनीकी सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था।

1 सितम्बर, 1996 को आर.एन्ड सी.डी. एस. के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ तकनीकी सहायक के रूप में चयनित किया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको तकनीकी अधीक्षक के रूप में पुनः पदनामित तथा 1 सितम्बर, 2008 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पदोन्नत/ उन्नयन दिया गया। 2 सितम्बर, 2016 को एम.ए.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको उन्नयन (लेवल-9) दिया गया। श्री दिलवेंद्र सिंह रावत एक लोकप्रिय, हंसमुख एवं कर्मठ वरिष्ठ तकनीकी अधीक्षक रहे हैं।

**श्री अनिल यादव (26447), कनिष्ठ सहायक, स्वास्थ्य एकक**



**श्री अनिल यादव** ने 26 अक्टूबर, 1984 को संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेंडेंट (800-1150/-रु.) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 नवम्बर, 1992 को आर.सी. डी.एस. के अन्तर्गत आपको (950-1400/-रु./3050-4590), 1 जनवरी, 1999 को (ग्रुप 'डी' से ग्रुप 'सी') अवर श्रेणी लिपिक के रूप में

पदनामित किया गया। 1 सितम्बर, 1999 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ सहायक के रूप में मैप किया गया। 1 जनवरी, 2009 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। श्री अनिल यादव एक कर्मठ एवं मेहनती कनिष्ठ सहायक रहे हैं।

### श्री सीताराम राय (27198), कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, जैव रसायनिक इंजी. एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग



श्री सीताराम राय ने 26 जून, 1990 को संस्थान में ग्रुप 'डी' अटेन्डेन्ट (800-1150/-रु.) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 जुलाई, 2000 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको 3050-4590/-रु., 26 जून, 2010 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको 5200-20200 + 2000/-रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। 4 अप्रैल, 2016 को आपको (ग्रुप 'डी' से ग्रुप 'सी' में) कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में नियोजित किया गया। श्री सीताराम राय मेहनती एवं मिलनसार कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक रहे हैं। आप हिन्दी कक्ष की गतिविधियों में खुशी के साथ भागीदारी करते रहे हैं।

### स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/U-1/361289 दिनांक 11.10.2021 के अनुसार प्रो. संजीव जैन (यांत्रिक इंजीनियरी विभाग) ने संस्थान से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के लिए अनुरोध किया था, जिसे सक्षम अधिकारी ने 11.10.2021 से स्वीकार कर लिया है। संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय एवं स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

## एक साथ दो मोर्चों पर लड़ती हिन्दी

(प्रो. रजनीश कुमार शुक्ला)

हिन्दी एक साथ दो मोर्चों पर लड़ रही है। एक ओर शिक्षा का मोर्चा है तो दूसरी तरफ बाजार। भारत जैसे देश में जहां शिक्षा से निर्मित होने वाली अर्थव्यवस्था लगातार बढ़ रही है, वहीं बाजार की दृष्टि से भी भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभर रहा है, लेकिन बाजार जहां हिन्दी और भारतीय भाषाओं में विस्तार पा रहा है, वहीं शिक्षा में भारतीय भाषाएं सिकुड़ती जा रही हैं। यह कमजोरी पहले केवल उच्च शिक्षा के संस्थानों में थी, जहां हिन्दी और भारतीय भाषाओं को लगभग निषिद्ध घोषित कर दिया गया था, वहीं अब माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भी हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएं उपेक्षणीय हो गई हैं। सामान्यजन के बदलते दृष्टिकोण के पीछे निश्चित रूप से शासकीय नीतियां और समाज के प्रभुत्वशाली वर्ग की भारतीय भाषाओं के प्रति उपेक्षा एवं अंग्रेजी के प्रति अतिशय मोह बढ़ा कारण रहा है। आजादी के तत्काल बाद जिस जज्बे के साथ इस देश ने राजभाषा के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया था और यह सपना देखा था कि हिन्दी अगले 10-20 वर्षों में समस्त भारत की संपर्क भाषा, राजभाषा और उससे आगे बढ़कर राष्ट्रभाषा के रूप में विकसित होगी, वह स्वप्न अब भी अधूरा है। सामान्यतः सिद्धांत है कि जो भाषा बाजार में चलती है वही अंततः राज और समाज की भाषा बनती है, लेकिन हिन्दी और भारतीय भाषाओं के साथ इसका उलटा हो रहा है। देश की आर्थिक गतिविधियों के संचालन में विशेषतः खुदरा व्यापार में हिन्दी और भारतीय भाषाएं अपरिहार्य हैं, पर समाज के संचालन और राजकाज की भाषा के रूप में इनकी भूमिका अब भी सीमित है।

देश में अंग्रेजी भाषा बोलने वालों की संख्या भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किसी भी भाषा से कम है। बावजूद इसके वह अब भी पूरे भारत के राजकाज की भाषा बनी हुई है। इसी कारण यह एक वर्चस्वशाली भाषा है। अंग्रेजों की नीतियों के कारण भारतीय भाषाओं के बीच की समरसता और बहुभाषिकता की स्वीकृति के प्रति संदेह पैदा हुआ, जबकि भारत में भाषा संस्कृति के निर्माण, मनुष्य के बलिदान और स्वाभिमान तथा जीवन का साधन रही है। भारत में भाषा का लोकोत्तर चरित्र है। उसका परंपरागत इतिहास है। उसे ज्ञान के विस्तार और ज्ञान की निर्मिति के लिए उपलब्ध साधन के रूप में देख सकते हैं। सभी भारतीय भाषाओं में ऐसी पूरकता है जिससे भारत नाम के सांस्कृतिक राष्ट्र की निर्मिति होती है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक संपूर्ण राष्ट्र एकता के सूत्र में बंधता है। इसकी विविधताओं को स्वीकार करके राष्ट्रीय एकता सिद्ध होती है। हालांकि संसद की चर्चा का अधिकांश हिस्सा हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में हुआ है, पर अभी भी कार्यपालिका में इनका प्रयोग सापेक्षिक रूप से कम है। न्यायपालिका में तो हिन्दी एवं भारतीय भाषाएं प्रवेश पाने के लिए संघर्ष कर रही हैं। उच्च शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। इस देश के भाषायी कुलीन श्रेष्ठ शिक्षकों एवं शोधवेत्ताओं ने पूरे प्रयास से हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं को उच्च शिक्षा एवं शोध की भाषा बनने से रोका है। तर्क यह है कि हमारी भाषा में सामग्री नहीं है। इस नाते हम अंग्रेजी में पढ़ने के लिए बाध्य हैं।

हम जानते हैं कि स्नातक में आने वाला हमारा विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा को कितना समझ पाता है? भाषा सीखते-सीखते ही उसकी जिंदगी चली जाती है। इस संदर्भ में 'स्वराज इन आइडियाज' में के. सी.

भट्टाचार्य लिखते हैं कि मैं इस स्थिति में आ गया हूँ कि बांग्ला में कुछ भी नहीं सोच सकता। जो सोचता हूँ, उसे बांग्ला में लिख नहीं सकता, इसलिए मेरे द्वारा लिखित 'स्वराज इन आइडियाज' में भी मौलिकता नहीं आएगी। भट्टाचार्य की स्वीकारोक्ति का हमें ध्यान रखना चाहिए। हमें ऐसी शिक्षा पद्धति की स्थापना का प्रयत्न करना होगा जिसमें सृजनात्मक कल्पनाएँ और नई संभावनाओं का चिंतन मनुष्य अपनी मातृभाषा में कर सके। इसके लिए हमें दुनिया में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान के संसाधनों, तकनीकी उपकरणों के संसाधनों, संप्रेषण के माध्यमों का समन्वित प्रयोग करते हुए संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को परिवर्तित करने का यत्न करना है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति की स्वीकृति के एक वर्ष के अंदर ही इंजीनियरिंग और मेडिकल कालेजों में भारतीय भाषाओं में अध्यापन प्रारंभ होना एक युगांतकारी घटना है, जो सही संदर्भों में मैकाले को खारिज करते हुए भारत के लोगों के लिए भारत की जुबान में शिक्षा हो, इसका पथ प्रदर्शित करती है। शिक्षा के भारतीयकरण का अभियान भी भाषा के माध्यम से ही होगा। इसका सृजनात्मक पक्ष देखने को मिलने लगा है। हिंदी को लेकर जन स्वीकृति का जो स्वरूप बन रहा है, उसे शिक्षा में उतारना होगा। इसके लिए नई शिक्षा नीति में चयन मूलक स्वतंत्रता और आवश्यकता मूलक चयन की दृष्टि से भारतीय भाषाओं को प्रस्तुत किया गया है। भारत की बहुभाषिकता को संवर्धित करते हुए हिंदी आने वाले 10 से 15 वर्षों में भारत सहित विश्वस्तर पर ज्ञान-विज्ञान और तकनीक की भाषा के रूप में विकसित हो सकती है।

हम दुनिया के तमाम देशों पर एक नजर

दौड़ाएँ तो उच्च स्थान पर वही राष्ट्र हैं जिन्होंने शिक्षा, व्यापार और सरकारी कामकाज, इन सबके बीच मातृभाषा को स्वीकारा और बढ़ावा दिया है। हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं को स्वीकार करना, उन्हें शिक्षा, व्यापार और सरकार की भाषा बनाना ही वास्तव में भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्ति दिलाना है

## कविता

### बेटियां

मेहंदी रोली कंगन का सिंगार नहीं होता,  
रक्षा बंधन भईया दूज का त्यौहार नहीं होता  
रह जाते हैं वो घर सूने, आंगन बन कर  
जिस घर में बेटियों का अवतार नहीं होता।

जन्म देने के लिए **माँ** चाहिए  
राखी बांधने के लिए **बहन** चाहिए  
कहानी सुनाने के लिए **दादी** चाहिए  
जिद पूरी करने के लिए **मौसी** चाहिए  
खीर खिलाने के लिए **मामी** चाहिए  
साथ निभाने के लिए **पत्नी** चाहिए  
पर यह सभी रिश्ते निभाने के लिए,  
**बेटियां** तो **जिन्दा** रहनी चाहिए।

घर जाने पर दौड़कर जो पास आये, उसे कहते हैं **बेटियां**  
थक जाने पर प्यार से जो माथा सहलाए, उसे कहते हैं **बेटियां**  
कल दिला देंगे कहने पर जो मान जाये, उसे कहते हैं **बेटियां**  
हर रोज समय पर दवा की जो याद दिलाय, उसे कहते हैं **बेटियां**।

सहते हुए भी अपने दुःख जो छुपा जाये, उसे कहते हैं **बेटियां**  
दूर जाने पर जो बहुत रुलाए, उसे कहे हैं **बेटियां**  
पति की होकर भी पिता को जो ना भूल पाये, उसे कहते हैं **बेटियां**  
मीलों दूर होकर भी पास होने का जो एहसास, दिलाये उसे कहते हैं **बेटियां**  
अनमोल हीरा जो कहलाए, उसे कहते हैं **बेटियां**।

प्रस्तुतकर्ता— श्री पुरुषोत्तम दत्त कुकरेती  
(हिन्दी कक्ष)